पेरियार ई.वी. रामस्वामी

क्रांतिकारी बुद्धिजीवी समाज सुधारक

प्रो. डॉ. विमलकीर्ति

सामाजिक-सांस्कृतिक विद्रोही : पेरियार रामास्वामी

आधुनिक भारत में सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, वैचारिक परिवर्तन-वादियों की, विद्रोहियों की, क्रान्तिकारियों की एक सशक्त परम्परा बनी है।

राजनीतिक क्रान्ति ही क्रान्ति होती है और अन्य क्रान्तियों का कोई महत्त्व नहीं होता है ऐसी बात नहीं है। जैसे राजनीतिक शत्रु होते हैं उसी प्रकार के सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और वैचारिक शत्रु होते हैं। जैसे देश के बाहर रहनेवाला शत्रु हो सकता है उसी प्रकार देश के भीतर रहने वाला भी शत्रु हो सकता है। वास्तव में शत्रु वह व्यक्ति होता है जो न्याय पर अन्याय करता है, दूसरों के मानवीय अधिकारों को धर्म के नाम पर हड़प लेता है। जैसे जो लोग हमारी

राजनीतिक सार्वभौमिकता को छीन लेते हैं उनको हम अपना शत्रु मानते हैं उसी प्रकार जो लोग किसी वर्ग या समाज की सामाजिक, धार्मिक सार्वभौमिकता को छीन लेते हैं वे लोग भी समाज के, देश के शत्रु हैं। और इस तरह के लोगों के खिलाफ, इस प्रकार की जाति या वर्ग के खिलाफ संघर्ष करना, विद्रोह करना राष्ट्रद्रोह नहीं है। बल्कि इसको तो मानवता की स्थापना के लिए संघर्ष मानना चाहिए। पेरियार रामास्वामी ने दक्षिण भारत में ब्राह्मण जाति (वर्ण) वर्चस्व, प्रभुत्व के खिलाफ जो आन्दोलन चलाया उसका सामाजिक परिवर्तन की दृष्टि से बहुत बड़ा महत्त्व है। कुछ लोगों ने और वर्ण वर्चस्ववादी संगठनों ने पेरियार रामास्वामी के आन्दोलन का और उनके विचारों का गलत अर्थ लगाने का प्रयास किया। इस सम्बन्ध में जब हम भारत के बारे में सोचते हैं तो यह बात बिलकुल नई नहीं लगती है। भारत में प्राचीन काल से ही सामाजिक न्याय, सामाजिक समानता की बात करने वालों का, ब्राह्मणी-सामंती वर्णवर्चस्व के खिलाफ बोलने वालों को बहुत ही बुरा-भला कहा गया, बहुत बुरी तरह से अपमानित भी किया गया। पूना (महाराष्ट्र) में जोतिबा फुले और सावीत्रीबाई फुले के साथ वहां के सनातनी ब्राह्मणों ने बहुत बुरा व्यवहार किया था, यह इतिहास है। यहां डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर को भी कम अपमानित नहीं किया गया। जिन लोगों ने और संगठनों ने पेरियार रामास्वामी को राष्ट्रद्रोही कहा वे लोग और उनकी परम्परा कभी भी मानवतावादी नहीं रही है। उनका

इतिहास, उनकी संस्कृति और उनका धर्म कभी भी समतावादी, मानवतावादी नहीं रहा है।

पेरियार रामास्वामी आधुनिक भारत के एक महान सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और वैचारिक क्रान्तिकारी थे। वे तथागत बुद्ध, कबीर, जोतिबा फुले, शाहू छत्रपति और डॉ. आंबेडकर की ही परम्परा के थे यह कहना गलत नहीं होगा। इन महापुरुषों का, सामाजिक-धार्मिक, सांस्कृतिक और वैचारिक क्रान्तिकारियों का अपना-अपना कार्यक्षेत्र था, अपनी-अपनी सोच थी। लेकिन सभी का उद्देश्य एक ही था भारत में सामाजिक न्याय और सामाजिक समानता की स्थापना, समतावादी-बुद्धिवादी समाज का निर्माण। संसार के सभी लोग पेरियार रामास्वामी को एक नास्तिक, एक बुद्धिवादी के रूप में जानते हैं। लेकिन पेरियार रामास्वामी केवल बुद्धिवादी और नास्तिक ही नहीं थे बल्कि वे सामाजिक समानता और सामाजिक न्याय के जबर्दस्त हिमायती भी थे। उनका नास्तिकवादी और बुद्धिवाद किसी वर्ण या जाति की धार्मिक आस्थाओं के भी खिलाफ नहीं था। वे वास्तव में पुरोहितवाद, धर्मान्धता, धार्मिक पाखण्ड के खिलाफ थे। उनकी यह मान्यता थी कि भारत का पतन पुरोहितवाद के कारण ही हुआ है।

रामास्वामी पेरियार का जन्म सन् 1879 में तमिलनाडु के इरोड नगर में हुआ था। वे दक्षिण भारत की एक 'नायकर' जाति के थे। 'नायकर' एक गैरब्राह्मण जाति है। पेरियार रामास्वामी के

समय दक्षिण भारत में ब्राह्मणवादीय का जबर्दस्त प्रभाव था। उसी प्रकार वहां जातिवाद और अछूतपन का स्वरूप भी बहुत ही घिनौने किस्म का था। दक्षिण भारत में ब्राह्मण एक बहुत ही अल्पसंख्य जाति थी और आज भी है। लेकिन वहां के धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक, राजनीतिक जीवन पर ब्राह्मणों का जबर्दस्त वर्चस्व था। वहां के हर क्षेत्र में ब्राह्मणों का जबर्दस्त वर्चस्व और प्रभुत्व होने के कारण वहां जातिवाद और अछूत का स्वरूप भी अत्यन्त अमानवीय था। इसलिए इस तरह की धार्मिक, सामाजिक व्यवस्था के खिलाफ विरोध की, विद्रोह की आवाज उठना स्वाभाविक था। वहां सन् 1812 में ही मतलब पेरियार रामास्वामी के जन्म से पहले ही 'मद्रास द्रविडियन एसोसियेशन' की स्थापना हुई। बाद में इसी संस्था का नाम बदलकर 'साउथ इण्डिया पीपल्स एसोसियेशन' रखा गया। इस संस्था के प्रारम्भिक संगठन का काम विशेषरूप से डॉ. टी. एम. नायर और पी. टी. चेट्टियार ने किया। इन्हीं लोगों को मद्रास ब्राह्मणेतर आन्दोलन के जनक कहा जाता है। यही संगठन बाद में जस्टिस पार्टी में बदल गया। उस समय मद्रास में कांग्रेस और होमरूल लीग का नेतृत्व ब्राह्मण लोग कर रहे थे। केवल मद्रास प्रान्त ही नहीं संपूर्ण दक्षिण भारत की सरकारी नौकरियों में केवल ब्राह्मणों का वर्चस्व था। इस प्रकार की स्थिति के कारण गैर ब्राह्मणों का असंतुष्ट होना स्वाभाविक था। देश की करीब-करीब सभी रियासतों में इसी प्रकार की स्थिति थी और अंग्रेजों की सत्ता का भी ज्यादा से ज्यादा लाभ ब्राह्मणों को ही मिल रहा था। ब्राह्मणों के बढ़ते वर्चस्व और प्रभुत्व के कारण उनके वर्चस्व के खिलाफ अन्य समाजों को संगठित करना किसी भी रूप में राष्ट्रद्रोही काम नहीं था। दक्षिण भारत में सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया प्रारम्भ हो गई थी। और पेरियार रामास्वामी ने वहां सामाजिक, सांस्कृतिक परिवर्तन की प्रक्रिया का सबल नेतृत्व किया।

पेरियार के सार्वजनिक जीवन का प्रारम्भ राजनीतिक जीवन से होता है। वे सन् 1918 में इरोड नगरपालिका के अध्यक्ष चुने गये थे उस समय वे जस्टिस पार्टी में थे। उसके बाद वे सन् 1919 में राष्ट्रीय कांग्रेस से जुड़ गये और उन्होंने 1920 में असहयोग आन्दोलन में हिस्सा लिया उसके बाद वे सन् 1921 में शराब विरोधी आन्दोलन में सक्रिय हुए। उन्होंने सन् 1924 में त्रावणकोर राज्य के 'वायकोम' नाम के हिन्दू मन्दिर में जहां अछूतों को प्रवेश नहीं दिया जाता था उसके खिलाफ चल रहे आन्दोलन (सत्याग्रह) में हिस्सा लिया और वे जेल में भी गये। वे 'वायकोम' के हिन्दू मन्दिर प्रवेश आन्दोलन में दो बार जेल गये। 'वायकोम' के मन्दिर प्रवेश

सत्याग्रह ने उनके सोच की दिशा ही बदल दी थी। इसी प्रकार की उससे पहले की भी एक घटना है। मद्रास के ही निरुनेवेलि जिले के सरमादेवी मन्दिर (हिन्दू) की जगह पर सन् 1922 में गुरुकुल स्थापित किया गया था। इस गुरुकुल की स्थापना ब्राह्मणों ने की थी और इसका उद्देश्य था हिन्दू छात्रों को धार्मिक शिक्षा और देशभक्ति की शिक्षा देना। इसको कांग्रेसी लोग मदद कर रहे थे। इस गुरुकुल में ब्राह्मण छात्रों के लिए भोजन की व्यवस्था अलग थी और उनको घटिया भोजन परोसा जाता था। जब पेरियार रामास्वामी को इस बात का पता चला तो उन्होंने इस व्यवस्था का भयंकर विरोध किया। इस प्रकरण में महात्मा गांधी भी कुछ नहीं कर सके। वे ब्राह्मणों को नाराज नहीं करना चाहते थे। इस प्रकार की कई घटनाएं हैं जब महात्मा गांधी दलितों की बजाय सवर्णों और विशेष कर ब्राह्मणों के पक्षधर रहे हैं। लेकिन पेरियार हमेशा गैर ब्राह्मणों के मतलब दलितों और पिछड़ी जातियों के हित-हिमायती रहे हैं।

पेरियार रामास्वामी क्योंकि कांग्रेस में थे इसलिए वे कांग्रेस के माध्यम से गैरब्राह्मणों के लिए सरकारी नौकरियों में, शिक्षा संस्थाओं में और विधानसभा में आरक्षण और प्रतिनिधित्व के लिए प्रयास कर रहे थे। लेकिन उन्होंने देखा कि तमिलनाडु प्रदेश कांग्रेस जिस पर ब्राह्मणों का प्रभुत्व था गैरब्राह्मणों के आरक्षण के खिलाफ है इसलिए उन्होंने 1925 में

हमेशा के लिए कांग्रेस से अपना रिश्ता तोड़ दिया उसके बाद उन्होंने उसी वर्ष एस. रामनाथ द्वारा स्थापित 'सेल्फ रिस्पेक्ट मूवमेंट' में सम्मिलित होकर उसका नेतृत्व अपने हाथ में लिया। यह आन्दोलन जातिवाद, अछूतपन, धर्म के नाम पर चलने वाले आडम्बरों व समाज और धार्मिक क्षेत्रों में व्याप्त ब्राह्मण वर्ण वर्चस्व को समाप्त करने के लिए था। वास्तव में पेरियार का यह आन्दोलन सामाजिक समानता बुद्धिवाद और धर्मान्धता विरोधी था लेकिन कुछ लोगों ने उनके इस आन्दोलन को ब्राह्मण विरोधी कह कर बदनाम करने का प्रयास किया। पेरियार रामास्वामी ईश्वर को, आत्मा-परमात्मा को नहीं मानते थे, भगवान बुद्ध भी ईश्वर, आत्मा, परमात्मा को नहीं मानते थे, डॉ. बाबा साहेब आंबेडकर भी ईश्वर, आत्मा, परमात्मा की संकल्पना को नहीं मानते थे। यह उनकी अपनी विचारधारा है। यह जरूरी नहीं है कि सभी को ब्राह्मणवाद और उस विचारधारा को मानना ही चाहिए। वास्तव में पेरियार रामास्वामी 'आत्मसम्मान आन्दोलन' के माध्यम से लोगों को सत्य का, वास्तवता का ज्ञान करा रहे थे। लोगों को धर्मान्धता से मुक्त कराने का क्रान्तिकारी काम कर रहे थे। पेरियार रामास्वामी को अपने इस आन्दोलन में काफी सफलता मिली। वहां के गैरब्राह्मण समाज में आत्मसम्मान की, स्वाभिमान की भावना जागी। उसका परिणाम यह हुआ कि दक्षिण भारत के सभी गैरब्राह्मण समाजों में एक नया जाग्रत और शिक्षित वर्ग पैदा हो गया। सभी के मन में शिक्षा के प्रति आकर्षण बढ़ा, गैरब्राह्मण समाज के पढ़े-लिखे लोग अपने इतिहास, संस्कृति की खोज करने लगे। वे अपने

इतिहास को और अपने साहित्य को खोजने लगे।

उसी प्रकार पेरियार रामास्वामी के आन्दोलन के कारण लोग ब्राह्मणी प्रतीकों और आदर्शों से घृणा करने लगे, जातिसूचक नामों का त्याग करने लगे, जाति प्रतीकों का त्याग करने लगे, अन्तर्जातीय विवाहों का समर्थन करने लगे, महिलाओं की स्वतंत्रता और समाज में उनके दर्जे का समर्थन करने लगे, बाल विवाह का विरोध करने लगे, दहेज प्रथा का विरोध करने लगे, देवदासी प्रथा जो हिन्दू मन्दिरों का एक अंग थी उसका विरोध करने लगे, जातिवाद और अछूतपन का विराध करने लगे, ब्राह्मण पुरोहितवाद का विरोध करने लगे, इस तरह उन्होंने सामाजिक परिवर्तन की बातों का जबर्दस्त प्रचार और प्रसार किया। उसी प्रकार पेरियार ने धार्मिक और सामाजिक कुरीतियों पर, ब्राह्मणों की पुरोहितशाही पर जबर्दस्त प्रहार किया इसीलिए दक्षिण भारत के और विशेषतौर पर मद्रास प्रान्त के ब्राह्मणों ने उनके बारे में देश में झूठा और मिथ्या प्रचार किया।

पेरियार रामास्वामी का जीवन एक विद्रोही, एक सामाजिक क्रान्तिकारी का जीवन रहा है। उन्होंने देश और विदेश की यात्राएं भी की हैं। पेरियार एक बुद्धिवादी भी थे और सामाजिक समतावादी भी थे इसीलिए उनको बुद्धधम्म के प्रति भी एक लगाव था। उन्होंने दिनांक 23 जनवरी 1954 को अपने जन्म नगर इरोड में एक बौद्ध सम्मेलन का आयोजन किया था। उसी प्रकार वे सन् 1954 में ही बर्मा में आयोजित विश्व बौद्ध सम्मेलन में सम्मिलित होने के लिए डॉ. आंबेडकर के साथ सपत्नीक रंगून गये थे। मतलब उनको बौद्ध धम्म के प्रति जबर्दस्त आकर्षण था। पेरियार के साहित्य को पढ़ने के बाद ऐसा लगता है कि उनका नास्तिकवाद और बुद्धिवाद बौद्ध धम्म के विरोध में नहीं था।

पेरियार रामास्वामी के जीवन और कार्य के कई पहलू हैं। उन सभी की चर्चा यहां सम्भव भी नहीं है। लेकिन उनका सामाजिक चिन्तन आज भी प्रेरणादायी है। वे सन् 1924 से सन् 1973 तक देश के सामाजिक और सार्वजनिक जीवन में रहे हैं। उन्होंने सामाजिक सवालों पर कई आन्दोलन भी किये हैं, और जेल में भी गये हैं—उन्होंने देश और समाज के सामने जो समस्याएं थीं उनमें से कई विषयों पर स्पष्ट रूप से अपने विचार लेखों के माध्यम से और किताबों के माध्यम से व्यक्त भी किये हैं। पेरियार की कर्मभूमि विशेषतौर पर दक्षिण भारत और मद्रास प्रान्त रही है। लेकिन उत्तर भारत के सामाजिक परिवर्तन के आन्दोलनों पर भी उनके सामाजिक,

सांस्कृतिक, नास्तिकतावादी और बुद्धिवादी विचारों का प्रभाव निश्चित रूप से दिखायी देता है। पेरियार रामास्वामी अपने संपूर्ण जीवन में एक विवादित व्यक्ति रहे। उसी प्रकार उनका साहित्य भी विवादित रहा है। उनके द्वारा रामायण पर लिखी हुई किताब भी बड़ी विवादित रही है। भारत के इस विवादित, विद्रोही व्यक्तित्व ने दिसम्बर 1973 को 94 साल की आयु में अन्तिम सांस ली। उन्होंने आधुनिक भारत के सामाजिक इतिहास के पन्नों में एक नया इतिहास जोड़ा। उन्होंने अपने विचारों, अपने कार्यों और अपने साहित्य के द्वारा आधुनिक भारत में सामाजिक समानता के आन्दोलन को गति देने का पूरा प्रयास किया। इसीलिए आज के सामाजिक परिवर्तनवादियों में उनके प्रति पूरे सम्मान की भावना है। पेरियार आज सारे समतावादी, सामाजिक न्यायवादी लोगों के लिए एक प्रेरणा हैं।

मैं हिंदुत्व का विरोधी क्यों हूँ?

(पेरियार और गाँधी की बातचीत)

पेरियार—हिंदुत्व को बिल्कुल ही समाप्त कर देना चाहिए।

गाँधी—आप ऐसा क्यों सोचते हैं?

पेरियार—ऐसा कोई धर्म नहीं, जिसे 'हिंदुत्व' कहा जाए।

गाँधी—लेकिन यह तो है।

पेरियार—यह ब्राह्मणों का षड्यंत्र है। उन्होंने लोगों को यह विश्वास दिला दिया है कि हिंदुत्व भी एक धर्म है।

गाँधी—क्या हम यह नहीं कह सकते कि सारे धर्म ही विश्वास और कल्पना पर आधारित हैं?

पेरियार—नहीं, हम ऐसा नहीं कह सकते, क्योंकि अन्य सभी धर्मों के ऐतिहासिक साक्ष्य उपलब्ध हैं। उन सभी धर्मों में ऐसे सर्वस्वीकृत सिद्धांत हैं, जिनको उनके सभी अनुयायी समान रूप से स्वीकार करते हैं।

गाँधी—क्या हिंदू धर्म में ऐसे सिद्धांत नहीं हैं?

पेरियार—कहाँ हैं? इसने पूरे समाज को ब्राह्मण, शूद्र और वैश्य जैसी अलग-अलग इकाइयों में विभक्त कर दिया है। यह घोषणा करता है कि ब्राह्मण सर्वोच्च हैं एवं अन्य नीच। यह विभेद ही इस तथाकथित धर्म की एकमात्र उपलब्धि है। इस 'धर्म' के वकीलों द्वारा किसी भी घोषित दावे की सच्चाई के लिए कोई पुख्ता सबूत उपलब्ध नहीं है।

गाँधी—ठीक है! हिंदू धर्म में कम से कम सिद्धांत तो हैं!

पेरियार—हमारे लिए यह कितना उपयोगी है? इस सिद्धांत के अनुसार सिर्फ ब्राह्मण ही उच्च जाति के हैं। आप, मैं और बाकी सभी निम्न जाति के लोग हैं।

गाँधी—आपकी बात सही नहीं है। वर्णाश्रम धर्म में ऊँची-नीची किसी भी जाति का कोई

उल्लेख नहीं है।

पेरियार–आप इससे संतुष्ट तो हो सकते हैं, किंतु व्यावहारिकता इसके बिल्कुल उलट है।

गाँधी–इसे व्यवहार में लाया जा सकता है।

पेरियार–जब तक हिंदुत्व का अस्तित्व है, तब तक यह असंभव है।

गाँधी–हिंदू धर्म की मदद से यह संभव है।

पेरियार–इस सूरत में धर्म द्वारा समर्थित ब्राह्मण और शूद्र के जाति-विभाजन का क्या होगा?

गाँधी–अभी आप ने कहा कि हिंदू धर्म में जाति-विभाजन सहित किसी भी सिद्धांत के समर्थन के लिए कोई प्रमाण नहीं है।

पेरियार–मैं कहता हूँ कि हिंदुत्व कोई धर्म ही नहीं है। इसीलिए इस धर्म के नाम पर समाज को ऊँच-नीच जातियों में विभक्त करने वाले दावे एवं सिद्धांत भी मान्य नहीं हैं। लेकिन यदि हम हिंदुत्व को एक धर्म के रूप में स्वीकार कर लेते हैं तो फिर धर्म के नाम पर किए जाने वाले दावों पर भी विचार करना पड़ सकता है।

गाँधी–हम लोग धर्म को स्वीकार कर सकते हैं और इसकी बुनियादी नीतियों के समर्थन में कुछ सिद्धांत बना सकते हैं।

पेरियार–यह असंभव है। यदि हम किसी धर्म को स्वीकार कर लेते हैं तो उससे संबद्ध किसी भी चीज को बदल नहीं सकते।

गाँधी–आपका यह कथन बाकी सभी धर्मों पर लागू होता है, किंतु हिंदू धर्म पर नहीं। इसे स्वीकार करने के बाद आप इसके नाम पर कुछ भी कर सकते हैं, आपको कोई नहीं रोकेगा।

पेरियार–आप यह कैसे कह सकते हैं? मुझे धर्म के नाम पर 'कुछ भी' करने की अनुमति कौन देगा? क्या मैं यह जान सकता हूँ कि इस धर्म का कौन-सा सिद्धांत मुझे यह करने की अनुमति देगा?

गाँधी—आप ठीक कहते हैं, हिंदुत्व कोई धर्म नहीं है। मैं यह मानता हूँ। मैं आपके इस कथन से भी सहमत हूँ कि हिंदू धर्म में स्थिर सिद्धांत नहीं हैं। इसी कारण मैं कहता हूँ कि सबसे पहले हम यह मान लें कि हम हिंदू हैं। फिर हम हिंदू धर्म के लिए सिद्धांतों का निर्माण कर सकते हैं। यदि हम चाहते हैं कि इस देश में ही नहीं, बल्कि सारी दुनिया में लोग अनुशासित और सम्मानित जीवन जीएँ तो यह हिंदुत्व की सहायता से ही संभव है। अन्य धर्म इसमें हमारी कोई सहायता नहीं कर सकते, क्योंकि वे ऐतिहासिक दृष्टि से प्रामाणिक और विश्वसनीय हैं। उनके सिद्धांतों के लिए संगत तर्क और सटीक प्रमाण भी उपलब्ध हैं। यदि हम वहाँ कोई चालाकी करते हैं तो उस धर्म के अनुयायी हमें दंडित भी कर सकते हैं। ईसामसीह के शब्दों या फिर बाइबिल में उनके विचार के रूप में जो भी संकलित है, उसे मानने के लिए ईसाई बाध्य हैं। मुसलमानों को भी कुरान में विद्यमान मुहम्मद नबी के विचारों को मानना अनिवार्य है। यदि उसमें परिवर्तन के लिए कोई सुझाव रखा जाता है तो वह अधार्मिक कर्म माना जाएगा। यदि कोई ऐसा विचार रखता है तो सबसे पहले उसे उस धर्म के बाहर आना पड़ेगा। इसके बाद ही अपने विचारों को अभिव्यक्त कर पाने के लिए वह स्वतंत्र होगा, अन्यथा उसे भयंकर दंड मिलेगा। सभी प्रामाणिक धर्मों की यही प्रकृति है। किंतु चूँकि हिंदुत्व कोई वैसा धर्म नहीं है, इसीलिए इस धर्म के नाम पर कोई भी व्यक्ति महान के रूप में स्वीकृति पा सकता है। वह अपने विचारों को धार्मिक सिद्धांत के रूप में व्यक्त कर सकता है। इस तरीके से कई महान व्यक्ति धर्म के नाम पर अपने बहुत से विचार व्यक्त कर चुके हैं। इसलिए हम भी इस धर्म में कुछ ऐसे सुधार ला सकते हैं, जो आज के समाज और समय के अनुसार जरूरी हों।

पेरियार—क्षमा कीजिए! यह असंभव है।

गाँधी—क्यों?

पेरियार—हिंदुत्व के स्वार्थी गिरोह हमें इसकी अनुमति कभी नहीं देंगे।

गाँधी—यह आप कैसे कह सकते हैं? क्या इस धर्म के सभी लोगों ने यह स्वीकार नहीं कर लिया है कि हिंदुत्व में छुआछूत नाम की कोई चीज नहीं है।

पेरियार—सैद्धांतिक रूप से किसी भी विचार की स्वीकृति एक चीज है और उसे व्यवहार

में लाना दूसरी चीज। इसलिए कोई सुधार हिंदू धर्म में लागू करना बिल्कुल असंभव है।

गाँधी—मैं इसे संभव बना रहा हूँ। क्या आपने अनुभव नहीं किया कि विगत चार-पाँच वर्षों में समाज में कितना परिवर्तन आ गया है।

पेरियार—समाज में होने वाले इन परिवर्तनों का मुझे ज्ञान है, किंतु ये वास्तविक परिवर्तन नहीं हैं। लोग आपके द्वारा सुझाए गए सुधारों को मानने का ढोंग कर रहे हैं, क्योंकि आप प्रभावशाली हैं और आपकी ख्याति की उन्हें सख्त जरूरत है और आपने उनकी बातों पर विश्वास कर लिया।

गाँधी—(मुस्कुराते हुए) आप किनकी बात कर रहे हैं?

पेरियार—ब्राह्मणों की।

गाँधी—आपका मतलब है सभी ब्राह्मण?

पेरियार—हाँ, बिल्कुल। सभी ब्राह्मण, वे भी जो आपके साथ हैं।

गाँधी—इस स्थिति में, क्या आप किसी भी ब्राह्मण पर विश्वास नहीं करते?

पेरियार—किसी पर भी विश्वास करना मेरे लिए संभव नहीं है।

गाँधी—क्या आप श्री राजगोपालाचारी पर भी विश्वास नहीं करते?

पेरियार—वे एक अच्छे और विश्वसनीय इंसान हैं। वे निःस्वार्थ और आत्मसमर्पित व्यक्ति हैं। ये सारे गुण उनके अपने समुदाय के कल्याण के लिए ही हैं। किंतु मैं अपने लोगों, अब्राह्मणों के हितों को उनके सुपुर्द नहीं कर सकता।

गाँधी—यह मेरे लिए विस्मय की बात है। क्या एक भी ईमानदार ब्राह्मण इस दुनिया में नहीं है?

पेरियार—कुछ हो सकते हैं। किंतु मुझे अभी तक कोई ऐसा ब्राह्मण नहीं मिला।

गाँधी—ऐसा मत कहिए। मैं ऐसे एक ब्राह्मण को जानता हूँ। मैं उसे संपूर्ण ब्राह्मण मानता हूँ। वह हैं गोपाल कृष्ण गोखले।

पेरियार—चलिए, संतोष हुआ। यदि आप जैसे महात्मा इतनी कोशिश करके सिर्फ एक

ब्राह्मण तलाश सकते हैं, तो हमारे जैसा 'पापी' भला कोई संपूर्ण ब्राह्मण कैसे पा सकता है?

गाँधी–(हँसते हुए) संसार हमेशा ज्ञानियों के अधीन रहेगा। ब्राह्मण शिक्षित हैं और वे हमेशा ही प्रभावी रहेंगे। इसके लिए उन्हें दोष देने से कोई लाभ नहीं है। दूसरों को भी ज्ञान और बौद्धिकता के उसी स्तर पर आना होगा।

पेरियार–हिंदुत्व एक मायने में अन्य सभी धर्मों से भिन्न है। इस धर्म में सभी ब्राह्मण शिक्षित हैं और सिर्फ वे ही ज्ञान और बौद्धिकता की बागडोर सँभाले हुए हैं। दूसरे लोगों में 90 प्रतिशत से भी अधिक अशिक्षित और मूर्ख हैं। एक ही धर्म को मानने वाले समाज में यदि सिर्फ एक समुदाय शिक्षित और प्रभावी बन सकने का अधिकार रखता है तो क्या हमें यह नहीं समझना चाहिए कि यह धर्म अन्य समुदायों के लिए अनिष्टकर है? इसीलिए मैं कहता हूँ कि हिंदुत्व एक घटिया धर्म है। इसका नाश हो जाना चाहिए।

गाँधी–आखिरकार आपके विचार क्या हैं? क्या हम यह मान लें कि आप हिंदुत्व का नाश इसलिए चाहते हैं कि ब्राह्मणों से छुटकारा मिल जाए।

पेरियार–यदि हिंदुत्व, जो हिंदू धर्म का एक गलत रूप है, का नाश हो जाता है तो कोई ब्राह्मण नहीं होगा। हमारे हिंदू धर्म मानने के कारण ही ब्राह्मणों का अस्तित्व है और वे शक्तिसंपन्न हैं तथा हम और आप शूद्र कहे जाते हैं।

गाँधी–ऐसा नहीं है। क्या ब्राह्मण मेरी बातें नहीं सुनते? क्या इस वक्त हम सब एक साथ मिलकर हिंदू धर्म में पाई जाने वाली बुराइयों को जड़ से खत्म नहीं कर सकते?

पेरियार–मेरा यह विनम्र विचार है कि आप ऐसा नहीं कर सकते। यदि आप ऐसा कर पाने में सफल भी हो जाते हैं तो आपके बाद किसी ऐसे 'महात्मा' का प्रादुर्भाव होगा जो आपके परिवर्तन को पूर्णतः बदल देगा और इस धर्म को पुनः उसी रूप में ला देगा, जिस रूप में आज हम इसे पाते हैं।

गाँधी–वह ऐसा कैसे कर सकता है?

पेरियार–अभी आपने कहा कि लोगों को धर्म के नाम पर हम अपने विचार स्वीकार करा सकते हैं। क्या भविष्य में उत्पन्न होने वाला 'महात्मा' धर्म के नाम पर 'कुछ भी' नहीं कर

सकेगा?

गाँधी—भविष्य में कोई भी व्यक्ति आसानी से धार्मिक रिवाजों को बदल नहीं सकता, जैसा आज तक हम अनुभव कर रहे हैं।

पेरियार—क्षमा कीजिए। हिंदुत्व को प्रचलन में रखकर आप कोई भी स्थायी परिवर्तन नहीं ला सकते। ब्राह्मण किसी को भी वहाँ तक जाने नहीं देंगे। उन्हें ज्यों ही यह लगेगा कि आपके विचार उनके हित के विरुद्ध हो रहे हैं, त्यों ही वे आपका विरोध आरंभ कर देंगे। अब तक किसी भी महात्मा ने कोई परिवर्तन नहीं किया। यदि कोई व्यक्ति करने की कोशिश करता है तो ब्राह्मण इसे कभी भी बर्दाश्त नहीं करेंगे।

गाँधी—ब्राह्मणों के संबंध में आपने गलत धारणा बना रखी है, जो आपके विचार पर हावी है। इतनी चर्चा करने के बाद भी मुझे नहीं लगता कि हम लोग किसी सहमति तक पहुँच पाए हैं। अभी भी हमें दो-तीन बार बैठकें करनी होंगी और तब फैसला करेंगे कि हम क्या कर सकते हैं (यह कहते हुए वे बिस्तर पर पूरी तरह लेट जाते हैं और अपना हाथ सिर पर रखकर धीरे-धीरे सहलाने लगते हैं!)।

—1927

•••

इरोड वेंकट नायकर रामस्वामी (17 सितम्बर, 1879 -24 दिसम्बर, 1973), तमिलनाडु के एक प्रमुख राजनेता थे। लोग उन्हें प्यार और श्रद्धा से पेरियार कहते थे। तमिल भाषा में पेरियार का अर्थ है, सम्माननीय व्यक्ति। पेरियार गहन बुद्धिवादी थे और धार्मिक पाखंड तथा रूढ़िवाद का उग्र विरोध करते थे। उन्होंने बाल विवाह, देवदासी प्रथा, विधवा पुनर्विवाह पर रोक, जाति प्रथा तथा स्त्रियों तथा दलितों के शोषण का जम कर विरोध किया। 1919 में पेरियार कांग्रेस पार्टी के सदस्य बने। बाद में उन्होंने जश्टिस पार्टी का नेतृत्व सँभाला। 1944 में जश्टिस पार्टी का नाम बदल कर द्रविड़ कड़गम कर दिया गया। रामस्वामी नायकर ने अपने को सत्ता की राजनीति से अलग रखा तथा आजीवन दलितों तथा स्त्रियों की दशा सुधारने के लिए प्रयास किया। भारतीय तथा विशेषकर दक्षिण भारतीय समाज के शोषित वर्ग के लोगों की स्थिति को सुधारने में उनका स्थान सबसे ऊपर है।